"जयप्रकाश नारायण के समाजवाद से सर्वोदय संबंधी विचारधाराओं का ऐतिहासिक अध्ययन"

संगीता कुमारी

शोधार्थी, इतिहास विभाग,

ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

सारांश :

जयप्रकाश के राजनीतिक विचारों में विविधता है। प्रारम्भ में अपने अमेरिकी प्रवास के काल में वे घोर मार्क्सवादी थे। उन पर मार्क्स के विचारों का अत्यन्त प्रभाव था। मार्क्सवादी होते हुए भी वे राष्ट्रवादी थे। अब वे भारत लौटकर आये तो गाँधीजी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में कूद पड़े। किन्तु उन्हें इस आन्दोलन में एक भी साम्यवादी नहीं दिखा। इसके विपरीत उन्होंने इस आन्दोलन को बुर्जुआ–आन्दोलन और महात्मा गाँधी को बुर्जुआ–आन्दोलन का पिट्ठू कहा। जयप्रकाश जी को भारतीय साम्यवादियों का ऐसा व्यवहार देखकर अत्यन्त दुःख हुआ। इस कारण से जयप्रकाश पुनः सर्वोदय पर विचार करने लगे। 1942 ई0 में (भारत छोड़ो आन्दोलन के संदर्भ में) बंदी बनाये जाने तथा लम्बें समय के बाद कारावास से मुक्त होने पर मसानी से वार्ता करते हुए उन्होंने कहा था कि "मेरी मार्क्सवाद में आस्था हिल गयी है लेकिन मैं यह उचित समझता हूँ कि मार्क्सवाद का परित्याग करने की अपेक्षा अपने मार्क्सवादी साथियों को अपना पक्ष समझाने का प्रयत्न करूँ।" इसके ठीक आठ वर्ष बाद उन्होंने सर्वोदय की उपयोगिता को स्वीकार किया था। जयप्रकाश समाजवादी थे। किन्तु उन्हें समाजवादी सरकारों के अनुभव से यह स्पष्ट था कि राज्य की सर्वोच्च शक्ति किसके हाथ में होगी। वे दलीय राजनीति के कुप्रभाव से भी परिचित थे और संसदीय लोकतंत्र में दल विहीन लोकतंत्र की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जनतंत्र में जनता को मताधिकार तो हैं किन्तु उसे अपनी पसंद का उम्मीदवार खड़ा करने की स्वतंत्रता नहीं है। अतः जनता के चुनाव में खड़े 10–12 प्रत्याशियों में से किसी एक–न–एक को चुनना ही पड़ता है।

मूल शब्द : समाजवाद, सर्वोदय, विचारों, विवधिता, मार्कसवाद, सविनय, कुप्रभाव

प्रस्तावना :

समाजवादी आन्दोलन का लक्ष्य आर्थिक और सामाजिक शोषण की समस्त स्थितियों को समाप्त कर ऐसी समाज–व्यवस्था की स्थापना करना रहा है जिसका मूल आधार समस्त जनता के लिए आर्थिक और सामाजिक न्याय हो। भारत में समाजवाद का विकास सामाजिक तथा आर्थिक पुनर्निर्माण की एक योजना के रूप में ही नहीं हुआ बल्कि वह क्रूर विदेशी साम्राज्यवाद के बन्धनों से राजनीतिक मुक्ति की एक विचारधारा के रूप में भी विकसित हुआ। भारत के समाजवादी आन्दोलन से जुड़े हुए प्रमुख नाम है : आचार्य नरेन्द्र देव, जयप्रकाश नारायण, डॉ. राम मनोहर लोहिया, अशोक मेहता, मीनू मसानी, जवाहर लाल नेहरू, डॉ0 सम्पूर्णानन्द, अच्युत

पटवर्धन, कमला देवी चटोपाध्याय आदि। 1914 से ही भारत के ये राष्ट्रीय नेता इस दिशा में विचार करने लगे थे कि हमारे लक्ष्य एक न्यायपूर्ण आर्थिक सामाजिक व्यवस्था होना चाहिए।

जयप्रकाश नारायण 1929 में अमेरिका से वापस लौटे थे। कुछ ही समय बाद जब जयप्रकाश जी ने 'अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी के श्रम शोध अनुभाग का कार्य संभाला तो उनकी मूलाकात आचार्य नरेन्द्र देव से हुई। इन दोनों ने बाद में कई और मित्रों को जोड़कर काँग्रेस समाजवादी पार्टी बनायी। जयप्रकाश जी आधुनिक लोकतान्त्रिक संसदीय व्यवस्था के कटु आलोचक थे। वे स्वयं एक श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ थे। उन्होंने राजनीति का पूरा अनुभव किया था। वे राजनीति का खोखलापन, आदर्शहीनता और भ्रष्टाचार देख रहे थे। राजनीति लोक, लोक सेवा से विरत हो गयी है। वह केवल राज चाहती है। अधिकार चाहती है किन्तु अधिकार के स्रोतों का नाश करती है। अधिकार तो गाँव में है। सामान्यजन में है। इसलिए जयप्रकाश जी ने अपना मुख्य क्षेत्र गाँवों को बनाया। जयप्रकाश कहते है–सत्ता के लिए दलीय होड़ से मुक्त होकर राजनीति का चरित्र नैतिक हो जाता है और तब तक राजनीति न रहकर लोक नीति बन जाती है। राजनीति में राज्य अपने हित में नीति बनाता है और अपनी सैनिक शक्ति से उसे जनता द्वारा मानवता है। इसके विपरीत लोकनीति में नीति लोक के द्वारा निर्धारित होती है, और तंत्र उसके अनुकूल बनता है। कहने को राजनीति दोनों हैं, किन्तु पहली राजनीति दूसरी से बिल्कुल भिन्न है। जहाँ तक राजनीति राज्यवादी है, अधिकारवाद की ओर ले जाती है, वहाँ दूसरी राजनीति तंत्र पर लोक का तथा लोक पर नैतिक मूल्यों का अंकुश स्थापित करती है। इस प्रकार स्वयं राजनीति राज्य निष्ठ और तंत्र निष्ठ न रहकर लोकनिष्ठ और जीवननिष्ठ बन जाती है। अर्थात् समाज के विकास की वह एक विधायक शक्ति बन जाती है। यह राजनीतिक सेवा है, प्रचलित राजनीतिक सत्ता के लिए शीत गृहयुद्ध है, शोषण और दमन की प्रक्रिया है।

जयप्रकाश ने संविधान और लोकतंत्र में भेद किया। संविधान में सत्ता कानून के हाथ में होती है किन्तु लोकतंत्र की सत्ता लोक के हाथ में होती है। संविधान में प्रतिनिधि को वापस बुलाने की व्यवस्था नहीं है किन्तु लोकतन्त्र और भ्रष्ट प्रतिनिधियों को पाँच वर्षों के भीतर वापस बुलाने को समर्थन करता है। जयप्रकाश ने लोकतन्त्र में जनता के तीन अधिकारों की स्वीकृति दी–1. प्रतिनिधि को वापस बुलाना, 2. राजनीतिक दलों से अलग जनता का उम्मीदवार खड़ा करना, 3. सरकार से मुक्त किन्तु उसके सहयोग से गाँव–गाँव, नगर–नगर, का जीवन चलाने की स्वायत्ता। जयप्रकाश जी राज्यशक्ति, लोकशक्ति और नैतिक शक्ति को मिलाकर चलते थे। जयप्रकाश कहते हैं–मैं आज भी यह मानता हूँ कि सत्ता पर अंकुश रखने के लिए और उसे नैतिक आदर्शों की ओर ले जाने क लिए यह आवश्यक है कि थोड़े प्रभावशाली लोग सत्ता से दूर रहकर जनत ाके बीच काम करते हैं। संगठित जनता ही शासकीय सत्ता पर अंकुश रख सकेगी और सत्ता से अलग रहकर काम करने वाले लोग ही जनता को सच्चा नेतृत्व दे सकेंगे।''

समाजवादी होने के नाते जयप्रकाश नारायण ने इस बात को स्पष्ट किया कि सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में व्याप्त असमानता का मुख्य कारण यह है कि कुछ लोगों का उत्पादन के साधनों पर बहुत अधिक

नियंत्रण है और बहुसंख्यक लोक उनसे वंचित है। इसलिए उनका आग्रह है कि समाज ऐसी व्यवस्था करे जिससे मनुष्य की शक्ति और क्षमताओं को निष्फल करने वाली आर्थिक बाधाएँ दूर हो सके। जयप्रकाश जी केवल राजनीतिक स्वतन्त्रता को ही पर्याप्त नहीं समझते, वे लिखते है–हिन्दुस्तान में गरीबी नहीं है। एक तरफ भुखमरी है, दूसरी ओर दौलत की मौज है। वर्त्तमान समाज के मूल रोग यानी आर्थिक और सामाजिक विषमता और उसके कारण हिन्दुस्तान में भी मौजूद है। यहाँ भी मुट्ठी भर लोग ज्यादा लोगों को चूस रहे है। समाजवाद के बिना राजनैतिक और आर्थिक स्वतन्त्रता एवं समानता सम्भव नहीं। नागरिक स्वतन्त्रता एवं साधनों की सफलता के अभाव में व्यक्ति अपने विकास का समुचित अवसर नहीं पा सकता। जब तक व्यक्ति को विकास के समुचित अवसर नहीं मिलेंगे। समाजवाद की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

मार्क्स से जयप्रकाश का विच्छेद 1952 ई0 में ''पूना'' में 21 दिन के उपवास के दौरान हुआ था। उपवास की समाप्ति के बाद भौतिकवाद और अच्छाई के सम्बन्धों की मीमांसा अपने लेख–''अच्छाई श्रेष्ठता के प्रेरक तत्त्वों'' में उनके द्वारा व्यक्त की गयी थी। उनके शब्दों में ''मुझे यह स्पष्ट हो गया कि भौतिकवाद एक दार्शनिक दृष्टिकोण के रूप में नैतिक आचरण का कोई आधार तथा अच्छाई के लिए कोई प्रेरणा प्रदान नहीं कर सकता।

जयप्रकाश नैतिकता को महत्त्वपूर्ण मानते थे। वे कहते थे कि समाज जब तक अच्छा नहीं बन सकता जब तक समाज के व्यक्ति अच्छे नहीं बनते और भौतिक सभ्यता में मनुष्य को अच्छा बनने की प्रेरणा नहीं है। आज मनुष्य केवल झूठ–फरेब, बेईमानी, भ्रष्टाचार को सल होते देखता है तो फिर वह क्यों अच्छा बने। अपने उपवास काल में जयप्रकाश ने इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचार किया था कि द्वन्द्वात्मक–भौतिकवाद के कारण कोई मनुष्य क्यों अच्छा बने इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया जा सकता। इस समय तक जयप्रकाश आध्यात्मिक सत्ता को स्वीकार करने लगे थे। इस प्रकार जयप्रकाश सर्वोदय पर विचार करने लगे और यह उनका तीसरा धर्म बन गया।

जयप्रकाश बताते हैं कि किस प्रकार वे सर्वोदय की मंजित पर पहुँचे। स्वतन्त्रता, समानता और बंधुत्व की जो ज्योति उन्हें राह दिखलाती थी, वहीं ज्योति उन्हें आखिर में सर्वोदय की मंजिले तक ले गयी। उन्हें इ सबात का दुःख नहीं है कि सर्वोदय की मंजिल का उनका रास्ता कुछ ढेढ़ा–मेढ़ा था किन्तु खेद यह है कि वे अपनी जीवन यात्रा में, जब गाँधीजी विद्यमान थे, जब इस मंजिल तक नहीं पहुँच सके। जयप्रकाश कहते हैं कि गाँधीजी के जीवन–काल में तो उनके बहुत सारे कार्यों व विचारों के वह आलोचक रहे हैं। राजनीतिक अस्त्र के रूप में अहिंसा कितनी सफल हो सकती हैं, इस वाद–विवाद में जेलों में हमने कई रातें बितायी हैं। उन दिनों मेरे मन में यह बात जम चुकी थी कि घोर निद्रा में डूबे हमारे बदनसीब राष्ट्र को जागृत करने और उसे क्रियाशील बनाने के लिए सविनय अवज्ञा–आन्दोलन तथा जेलों को भर देने का कार्यक्रम एक अच्छी व्यूह–रचना हो सकती है, किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति की अन्तिम लड़ाई में तो हिंसा को सहारा लिये बिना कोई चारा नहीं है। लेकिन बाद में जो घटनाएँ घटित होती गयी, उन्होंने मेरी इस मान्यता को गलत ठहराया, इतना ही नहीं, बल्कि

राजनीतिक अस्त्र और समाज परिवर्तन के साधन के रूप में अहिंसा की सफलता के सम्बन्ध में मुझे एक नयी प्रतीति हुई।

सर्वोदय–योजना :

गाँधीजी के जीवन काल में ही देश की तेजी से बिगड़ती हुई परिस्थिति तथा सरकारी नीति में व्याप्त भ्रम को देखते हुए, यह तय हुआ था, कि रचनात्मक कार्यकर्त्ता फरवरी, 1948 में वर्धा में एकत्र हो, और देश एवं सरकार के सामने पेश करने के लिए गाँधीनिष्ठ सिद्धांतों के आधार पर एक राष्ट्रीय कार्यक्रम तैयार करें। महात्मा गाँधी इस सभा का मार्गदर्शन करने वाले थे। बाद में 1949 के दिसम्बर में 200 रचनात्मक कार्यकर्त्ता वर्धा में इकट्ठे हुए। इन कार्यकर्त्ताओं ने उस कार्यक्रम का अनुमोदन किया जो 30 जनवरी, 1950 को ''सर्वोदय योजना'' के रूप में प्रकाशित हुआ।

जयप्रकाश इस योजना की तरफ आकर्षित हुए क्योंकि ऐसा ही कुछ लिखित, व्यवस्थित तो वे खोज रहे थे। उन्होंने कहा–''इस प्लान को तैयार करने वाले राजनीतिज्ञ नहीं है और उनका अपना राजनीतिक दल नहीं हैं उनकी कोशिश तो राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए एक गांधीवादी कार्यक्रमों की योजना देश के सामने पेश करने भर की है। आज दिक्कत इस बात की है कि पढ़े–लिखे लोगों को समाजवाद की तो धुँधली–सी समझ हैं भी, सर्वोदय प्लान के बारे में तो वे थोड़ा–सा जानते भर हैं। ज्यादात्तर लोगों के लिए सर्वोदय ढ़ीले दिमाग वालों का एक मतवाद–सा है जो अहिंसा और ट्रस्टीशिप की बातें बहुत करते हैं लेकिन किसी ठोस सामाजिक परिवर्तन से घबराते है... मान्यतायें जो भी हो, मैं गम्भीरता से विचार करने वाले हर व्यक्ति से इस योजना का अध्ययन करने की सिफारिश करूँगा। यह बुनियादी सामाजिक क्रांति का ठोस कार्यक्रम है। सर्वोदय प्लान को जो भी ठीक से पढ़ेगा उसे पता चलेगा कि वर्ग व जातिविहीन समाज के समान आदर्शों के साथ–साथ, सोशलिस्ट पार्टी के तात्कालिक कार्यक्रमों में ये 80 फीसदी कार्यक्रम इसमें शामिल है।''

सर्वोदय योजना ने जहाँ जयप्रकाश को बौद्धिक तुष्टि दी वहीं एक आत्मविश्वास भी दिया कि वे पार्टी के सामने ठीक दिशा रख रहे हैं। विनोबा जी को तेलंगाना के पोचमपल्ली गाँव में विनोबा को 100 एकड़ जमीन का दान मिला। एक बुनियादी क्रांति के यज्ञ में यह पहली आहूति थी। विनोबा ने 100 एकड़ के इस दान को अपनी प्रतिभा से धो–पोंछकर ऐसा चमका दिया कि उसमें से भूदान के एक अभूतपूर्व आन्दोलन का जन्म हुआ। जयप्रकाश धीरे–धीरे विनोबा जी की तरफ आकर्षित हुए।

सर्वोदय योजना के सामने जो आदर्श है, वह एक अहिंसक, शोषणयुक्त, सहकारी, समाज का आदर्श हैं जो जाति या वर्ग पर आधारित नहीं होगा और जिसमें सबके लिए समान अवसर रहेंगे।

एक समाजवादी मनीषी के रूप में जयप्रकाश नारायण को राजनीति के आर्थिक आधारों का स्पष्ट ज्ञान था। महात्मा गाँधी उन्हें समाजवाद का बड़ा भारतीय विद्वान मानते थें। वे समाजवाद को सामाजिक–आर्थिक पुनर्निर्माण का एक सम्पूर्ण सिद्धान्त मानते थें। उन्होंने करॉंची कांग्रेस के मूल अधिकारों से सम्बन्धित प्रस्ताव की आलोचना की थी। वे भूमिकर को घटाने, व्यय को कम करने तथा उद्योगों के राष्ट्रीयकरण के पक्ष में थे।

भूमिहीनों की समस्या को सुलझाने के लिए ''भूदान आन्दोलन'' प्रारम्भ किया गया। जयप्रकाश नारायण इस आन्दोलन का अभिन्न हिस्सा थे उन्होंने 'विनोबा भावे' के इस आन्दोलन में अपना योगदान दिया तथा पद यात्राएं की। वे भूमि वितरण की समीक्षा को अहिंसात्मक साधनों द्वारा हल करने के पक्ष थें। भूदान के विषय में वे कहते है–पूँजीवाद के प्रारम्भ में उद्योगपतियों में स्वतन्त्रता थी। स्वतन्त्र व्यापार चलता था लेकिन आगे बढ़कर औद्योगिक एकाधिकार समाप्त होने लगा। भूदान यज्ञ में जितनी चेतना भूमिपतियों में आती है। उससे कहीं अधिक जागरण भूमिहीनों में हो रहा है। यही पूँजीवाद के अन्त का रास्ता है। इसीलिए वह इस सामाजिक एवं बौद्धिक क्रान्ति की बागडोर नवयुवकों को सौंपना चाहते है।'' वे चाहते थे कि गाँवों को स्वायत्त तथा स्वावलम्बी इकाइयाँ बनाया जाए। इसके लिए भूमि सम्बन्धी कानूनों में आमूल सुधार करने की आवश्यकता थी। भूमि पर वास्तविक किसान का स्वामित्व होना चाहिए। उन्होंने सहकारी खेती का समर्थन किया। उन्होंने कहा–वास्तविक समाधान यह है कि उन सभी निहित स्वार्थों का उन्मूलन कर दिया जाए जिनसे किसी भी रूप में भूमि जोतने वालों का शोषण होता है। किसानों के सभी ऋणों को निरस्त कर दीजिए, जोतो को एकत्र करके सहकारी और सामूहिक फार्मों की तथा राजकीय और सहकारी ऋण व्यवस्था तथा हाट व्यवस्था और सहकारी सहायक उद्योगों की स्थापना कीजिए उन्होंने सहकारी प्रयत्नों के द्वारा ही कृषि तथा उद्योग के बीच सन्तुलन पर बल दिया।''

जयप्रकाश नारायण ने साम्प्रदायिकता और जाति का विरोध भी समानरूप से किया उनका मानना था कि साम्प्रदायिकता का उचित और अहिंसक समाधान आवश्यक है। वरना यह जहर धीरे–धीरे भारत की काया को नष्ट कर देगा। जातियों और सम्प्रदायों की भावात्मक अस्मिता थोड़ी भी हवा पाकर जल उठती है। इसे रोकती है। राष्ट्रचेतना। अर्थचेतना नहीं। किन्तु राष्ट्रचेतना बनाना और उसे बनाए रखना एक कठिन और लगातार जागरूकता का काम है। जयप्रकाश ने इस सम्पूर्ण क्रान्ति में इन समस्याओं पर विचार किया। वे कहते है–जातिवाद हमारे लिए अभिशाप है हमारी आज की राजनीति ने भी जातिप्रथा को मजबूत बनाने का काम किया है। हमें मनुष्य–मनुष्य के बीच भेद मिटाने है। जात–पांत, छूत–अछूत सब कुछ समाप्त करना है।''

जयप्रकाश की मूल दृष्टि मानवतावादी हैं। अतः वे पिछड़े का अर्थ मुख्यतः आदिवासियों और हरिजन से लेते है। वे कहते है– आदिवासी अभी बहुत पिछड़े रह गये है। हरिजन आज भी अलग बस्तियों में रहते है। अस्पृश्यता अथवा छुआछूत आज अपने भयंकर रूप में मौजूद है...। हमें मनुष्य–मनुष्य के बीच के भेद मिटाने है। समाज की सब कुरीतियों, कुरिवाजों और कुसंस्कारों के विरुद्ध भी संघर्ष की आवश्यकता है।''

जयप्रकाश अपने सामने एक समाज को देखते थे जो पूर्णतः हिंसामुक्त और शान्तिवाला हो। जो सादा जीवन और उच्च विचार से ही सम्भव है। इसलिए जयप्रकाश के विचारों में व्यावहारिकता का पक्ष मुख्य है। उन्होंने इन्हीं आधारों पर युवकों को जगाया। उनका नेतृत्व किया और राज्य सत्ता बदली। जयप्रकाश ने समग्र क्रान्ति के लिए युवकों का आहवान किया। उस समय गाये जाने वाले गीतों में एक प्रसिद्ध पंक्ति है–'जयप्रकाश का बिगुल बजा है, जाग उठी तरूणाई है, तिलक लगाने तुम्हें जवानों, क्रान्ति द्वार पर आई है' दिनकर ने जयप्रकाश को 'तरूण देश का सेनानी कहा। जयप्रकाश ने अपनी कविता में कहा ''यह विफल जीवन शत–शत

धन्य होगा, यदि समान धर्मा प्रिय तरूणों का कंटकाकीर्ण मार्ग यह कुछ सुगम बन जावे।'' इस रूप में जयप्रकाश ने तरूण शान्ति सेना का गठन किया। उनकी स्पष्ट धारणा थी कि जब तक सार्वजनिक हितों के लिए व्यक्तिगत हितों का बलिदान नहीं करते, आवश्यकताओं को सीमित करने की ओर प्रवृत्त नहीं होते, राजनैतिक व आर्थिक क्षेत्रों में विकेन्द्रीकरण नहीं लाते तथा ग्रामों को स्वशासन और आत्मनिर्भर नहीं बनाते तब तक सच्चा लोकतन्त्र स्थापित नहीं होता। उनके शब्दों में–सबसे पहली बात यह है कि लोकतन्त्र की समस्या मूलतः और सर्वोपरि एक नैतिक समस्या है। लोकतन्त्रों के लिए संविधानों, शासन प्रणालियों और दलों एवं चुनावों–इन सब बातों का महत्त्व है, पर जब तक जनता में समुचित नैतिक और आध्यात्मिक गुणों का विकास नहीं हो जाता तब तक संविधान एवं राजनैतिक प्रणालियाँ लोकतन्त्र को सफल नहीं बना सकती।'' जयप्रकाश के अनुसार लोकतन्त्र की सफलता के लिए सत्य, अहिंसा एवं प्रेम नागरिकों में अन्याय एवं दमन के प्रतिरोध का साहस, सहयोग और सहअस्तित्व की भावना दूसरे के विचारों के प्रति सहिष्णुता, कर्त्तव्य परायणता, उत्तरदायित्व की भावना दूसरे के विचारों के प्रति सहिष्णुता, कर्त्तव्य परायणता, उत्तरदायित्व की भावना, भ्रातृत्व और समानता की भावना में पूर्ण विश्वास एवं सीमित आवश्यकताएं आवश्यक है।

सर्वोदय आन्दोलन :

जयप्रकाश कहते है कि सर्वोदय आन्दोलन 'गहरे अर्थों वाला आन्दोलन है। आज के सामाजिक, राजनीतिक ढाँचे में समग्र और सम्पूर्ण परिवर्तन इस आन्दोलन का लक्ष्य है। यह आन्दोलन ऐसी व्यवस्था का निर्माण करना चाहता है, जो सभी सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक संगठनों में आमूलाग्न क्रान्ति लाये। समाज और मनुष्य के जीवन में सर्वांगीण क्रान्ति की शुरूआत करने की ख्वाहिश इस आन्दोलन की है। प्यारे लालजी के शब्दों में कहें तो ''अत्यन्त दूरगामी और अत्यन्त विशाल प्रभावकारी अहिंसक क्रान्ति के त्रिशुल की यह नोक है।'' भारतीय समाज का नवनिर्माण करने की और अहिंसक समाज–रचना के अधूरे काम को यह आन्दोलन आगे बढ़ा रहा है।''

परन्तु भूदान–ग्रामदान–आन्दोलन की शोहरत बाजारों में नहीं है, अखबारों में नहीं है, धारा–सभाओं में नहीं है। आज सर्वत्र राजनीति का बोलबाला है। यह सर्वोदय–आन्दोलन किसी दल या सत्ता के संकीर्ण अर्थ में नहीं, बल्कि विशाल अर्थ में राजनीति है। यह आन्दोलन यदि सफल हुआ तो, इसके आगे दुनिया की दूसरी सभी क्रांतियाँ फीकी लगेगी। संकीर्ण राजनीति का ध्येय है सत्ता प्राप्त करना और सत्ता के द्वारा ही सब कुछ करना। जब कि सर्वोदय की राजनीति सत्ता द्वारा नहीं, लोगों की शक्ति द्वारा काम करना चाहती है। विनोबा ने उसे 'लोकनीति' कहा है।

इस आन्दोलन का ध्येय यह है कि सरकार चाहे या न चाहे तो भी लोगों को समझाकर, उनके जीवन में क्रान्ति लाकर उनके द्वारा समाज में क्रान्ति करना। बल्कि इससे भी आगे बढ़कर इसका लक्ष्य है, दल और संसद को माध्यम बनाये बिना ही लोग अपनी व्यवस्था संभालें।

1953 का चांडील सर्वोदय सम्मेलन और 1954 का बोधगया सम्मेलन, सर्वोदय आन्दोलन व जयप्रकाश दोनों के लिए बहुत महत्त्व के हैं। जयप्रकाश ने बोधगया (बिहार) के सर्वोदय सम्मेलन में सर्वोदय आन्दोलन के लिए अपना जीवन–दान घोषित किया था। चांडील सर्वोदय सम्मेलन में विनोबा ने सर्वोदय आन्दोलन की मूल भूमिका और दिशा का अपूर्व विश्लेषण किया। उन्होंने कहा हमको स्वतंत्र लोकशक्ति का निर्माण करना है।

1963 में रायपुर में सर्वोदय सम्मेलन हुआ, और ग्रामदान पर जयप्रकाश का संक्षिप्त व्याख्यान हुआ। 1969 में सर्वोदय आन्दोलन का कारवां राजगीर (बिहार) पहुँचा।

जयप्रकाश ने सर्वोदय से प्रभावित होने पर भूदान यज्ञ के सम्बन्ध में समय–समय पर निम्नलिखित विचार व्यक्त किये हैं :–

''भूदान यज्ञ जैसा काम पहले कभी नहीं हुआ। जिस शांति और अहिंसा से हमने स्वराज्य पाया, उसी अहिंसामय प्रेम से ही समाज का परिवर्त्तन हो रहा है।'' जिस क्रांति के लिए आप नारे लगाते हैं वह जनक्रांति इसी भूदान से सफल होगी। यह मैं क्रांतिकारी युवकों से आग्रह पूर्वक कहना चाहता हूँ।

''वातावरण में चेतना आ रही है। स्वराज्य की लड़ाई के समय का वायुमंडल देश में तैयार हो रहा है। सारे गरीब विनोबा के सिपाही बन रहे हैं। क्रांति की हवा तैयार हो रही है। मैं आपको डरा नहीं रहा हूँ। न्याय होकर रहेगा। यह भूदान नहीं, भू–न्याय हो रहा है।''

भूदान यज्ञ में मैं आकर शरीक हुआ। मैं इसलिए शरीक हुआ कि देश को जो बड़ी भारी समस्या है उसे हल करने के लिए एक बड़ा भारी रास्ता मिला। भूदान यज्ञ का जो काम शुरू हुआ है वह यह सोचकर शुरू नहीं हुआ कि सारी जमीन गाँव की हो।

जयप्रकाश ने कहा कि ''शोषण विहीन समाज अहिंसा से ही हो सकता है।'' स्मरणीय है कि जयप्रकाश के सर्वोदय में खिंच जाने पर युवकों विशेषकर जो उनके अनुयायी व समाजवादी थे–की स्थिति समभ्रम की हो गई थी।

भूदान यज्ञ के कार्यक्रम को सामने रखकर विनोबा ने हमें नई प्रेरणा दी है। शोषणविहीन समाज हिंसा से नहीं प्राप्त हो सकता। हिंसा से नये प्रकार का शोषण शुरू होता है। शोषण से अर्थ है कि एक व्यक्ति का जो हक है वह उसे न मिले। बिल्कुल शोषण नहीं, यह संभव नहीं है। सच्चा शोषण–विहीन समाज अहिंसा से ही हो सकता है। ''इसलिए मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं है कि हम समाजवाद का नाम छोड़ दें और सर्वोदय को ले।''

वे यह मानते थे कि ग्रामदान सामाजिक परिवर्तन का ठोस कार्यक्रम है। ग्राम में सामूहिकता और परस्पर सहयोग की भावना जगाकर ग्राम स्वराज्य की स्थापना के लिए नींव डालनी है। इसका पहला स्वरूप बहुत क्रांतिकारी है। उसमें भूमि का स्वामित्व छोड़ने के साथ–साथ सम्पूर्ण ग्राम की सारी भूमि पर लगभग समानता से पुनर्वितरण। ग्रामदान में इस बात पर बल दिया गया है कि भूमि का मालिक भगवान है। भूमि पर व्यक्तिगत स्वामित्व नहीं रहना चाहिये। भूमि पर पूरा स्वामित्व ग्राम का होना चाहिए।

जयप्रकाश ने भूदान आन्दोलन को आर्थिक व सामाजिक क्रांति का गाँधीवादी तरीका मानते थे। उन्होंने इसे नवीन जीवन पद्धति सम्बन्धी सिद्धांत एवं व्यवहार तथा नवीन सामाजिक दर्शन की संज्ञा दी है। भूदान के यज्ञ में भूमि की आहुति देते समय विनोबा जी के अनुसार मन में यह भावना होनी चाहिए कि सम्पूर्ण भूमि गोपाल (ईश्वर) की है। इस प्रकार की भावना के अभाव में नवीन सर्वोदय सामाजिक व्यवस्था का निर्माण संभव नहीं हैं।

अतः भूदान आन्दोलन एक नैतिक क्रांति है। इसके फलस्वरूप भूमिहीनों को केवल भूमि की ही प्राप्ति नहीं होगी। अपितु उनका नैतिक उत्थान भी होगा। भूमिहीनों के लिए भूमि प्राप्त कराके उनके हृदयों को जोड़ना है। विनोबा जी के शब्दों में ''विधि द्वारा निस्सन्देह अतिरिक्त भूमि हस्तगत की जा सकती है लेकिन क्या उसके द्वारा स्वामित्व, अहम के भाव से मुक्त किया जा सकता है ? क्या हम ऐसी विधि को पारित और क्रियान्वित कर सकते हैं कि सभी व्यक्ति अहम का परित्याग कर दे तथा उनमें कोई श्रेष्ठता की भावना न हो ?'' निस्सन्देह नहीं।

विनोबा जी के शब्दों में ग्राम में भूमि का पुनःवितरण हमारा कार्य होना चाहिए। हमारा आन्दोलन भारत में ही नहीं विश्व में नये व्यक्ति के निर्माण के लिए प्रयत्नशील है... सभी भूमि भगवान की है इसका यह अर्थ है कि संसार के सभी व्यक्तियों को उसके उपयोग की स्वतन्त्रता होनी चाहिए।

जयप्रकाश के सर्वोदय सम्बन्धी विचार :

सर्वोदय आन्दोलन के सम्बन्ध में प्रायः एक शिकायत हुआ करती है कि वह राजनीति से अलग रहता है। आचार्य कृपलानी और ढ़ेवरभाई जैसे सर्वोदय के मित्र भी हमेशा कहते रहते हैं कि आप लोग देश की ''मेन स्ट्रीम'' से मुख्य धारा से अलग हो गये हैं। किन्तु मैं आज तक इस बात से सहमत नहीं हो सका हूँ। मैं तो यही कहता रहा हूँ कि सर्वोदय का आन्दोलन, जो जनता के बीच चल रहा है, वह बुनियादी आन्दोलन है और वही देश की मुख्य धारा है। सर्वोदय आन्दोलन राजनीति से अलग रहा है, यह विचार भी गलत है। उलटे हमने तो कनजोर और नकली राजनीति के बदले सशक्त और असली राजनीति ग्रहण की है। हम सर्वोदय–आन्दोलन में जो कुछ कर रहे हैं, वह गम्भीरतम अर्थ में राजनीति ग्रहण की है। हम सर्वोदय–आन्दोलन में जो कुछ कर रहें है, वह गम्भीरतम अर्थ में राजनीति ही है, क्योंकि यदि हमें सफलता मिले तो हिन्दुस्तान की सारी सामाजिक–आर्थिक–राजनीतिक पद्धति में एक आमूल क्रांति आ जाए। इसलिए वास्तव में हम राजनीति से बाहर निकले नहीं हैं, उल्टे राजनीति की गहराई में हमने प्रवेश किया है। इस बात का भावार्थ जनता समझे, यह बहुत महत्त्वपूर्ण है।

जयप्रकाश को सर्वोदय आन्दोलन में सार दिखा तो वे उसकी पैरवी करने लगे कि समाजवादियों में और सर्वोदय वालों में निकटता बढ़नी चाहिए। उनका मानना था कि इससे समाजवादी जनता से जुड़ेंगे, उनका जनाधार मजबूत होगा और कॉंग्रेस और उनका फर्क स्पष्ट होगा।

1970 के मुसहरी अभियान के संदर्भ में जयप्रकाश कहते हैं कि सर्वोदय आन्दोलन की परिस्थिति और उसकी पद्धति के बारे में कुछ चिंतन उनके भीतर तब चलने लगा था, इसलिए अपने संल्प के उन क्षणों में भी

वे ''उतर सकता है कि नहीं'' की बात कह गये। सर्वोदय आन्दोलन की परिस्थिति के बारे में उन्होंने स्पष्ट ही लिखा–''सर्वोदय कार्यकर्ताओं के जीवन पर उपस्थित इस संकट को मैंने ईश्वरीय माना। हम गांधीवाले धीरे–धीरे निस्तेज होते जा रहे थे और अपने तुच्छ झगड़ों में फँसते जा रहे थे। कारण यह था कि हमें किसी विरोध का, किसी खतरे का मुकाबला नहीं करना पड़ता था। लेकिन अब, जबकि अपनी जान की जोखिम में डालकर हमें अपना काम करना पड़ेगा। हमारा भी परिष्कार होगा, क्षीर और नीर अलग–अलग होंगे और हमारा तेज प्रकट होगा।''

जयप्रकाश का मुसहरी–अभियान अपनी तीव्रता और तलस्पर्शिता की दृष्टि से सर्वोदय आन्दोलन का अगला कदम ही था।

समाजवाद और सर्वोदय :

अधिकांश लोग सर्वोदय सिद्धांत को एक सनक मानते हैं जो अहिंसा तथा न्यासिता की तो बातें करता है किन्तु कोई सामाजिक परिवर्तन नहीं लाता है। सर्वोदय योजना निस भावुकतावाद नहीं हैं, 'बल्कि बुनियादी सामाजिक क्रान्ति का एक ठोस कार्यक्रम है।''

यह योजना परम्परागत समाजवादी क्षेत्र से अलग एक नयी समाज व्यवस्था को वास्तविक रूप देने की कोशिश है। 'सर्वोदय तथा समाजवादी दल के विचारों में आश्चर्यजनक' समानता है। जो कोई सर्वोदय योजना को पढ़ने का यत्न करेगा, उसे पता चलेगा कि इस योजना में समाजवादी दल के तात्कालिक कार्यक्रम का 80 प्रतिशत अंश निहित है ; इसके अलावा समाजवादी दल के वर्गहीन एवं वर्णहीन समाज का आदर्श भी उसे मान्य है। सर्वोदय योजना कार्यान्वित होने पर समाजवाद की दिशा में हमें बहुत दूर तक ले जायेगी। लेकिन जयप्रकाश सर्वोदय योजना को ही समाजवाद नहीं मानते। ''वह इससे अधिक बहुत कुछ है।''

सर्वोदय और साम्यवाद की तुलना से यह स्पष्ट है कि दोनों के स्वरूप में आधारभूत अन्तर है। साम्यवादियों द्वारा की गई क्रांति हिंसा पर आधारित है। वे अपने पीछे कटुता को छोड़ जाते है। इस प्रकार की क्रांतियाँ कष्टदायक होती है। सर्वोदय की अहिंसक क्रांति समान रूप से सुखद है तथा उनके पीछे कोई कटुता या वैमनस्य नहीं रहता। जयप्रकाश का कथन था कि यदि भूमि वितरण को कोई सुनिश्चित कार्यक्रम हैं तो वह विनोबा का ही है। ''मार्क्सवादी सिद्धांतों के आधार पर यदि आप भूमि वितरण के कार्य का प्रयत्न करेंगे तो कहीं के न रहेंगे।''

सर्वोदयी चिंतन में साध्य और साधन का अटूट सम्बन्ध है। साध्य की पवित्रता साधन की पवित्रता पर निर्भर करती है। साम्यवादियों का यह कथन जयप्रकाश की दृष्टि में मिथ्या प्रर्वजना ही है कि ''राज्य विहीन समाज की स्थापना सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व से ही संभव है और पारस्परिक स्नेह और भाईचारा वर्ग संघर्ष और घृणा का परिणाम है।

समाजवाद की मान्यता थी कि समाजवाद गाँधीवाद अर्थात् सर्वोदय की उपेक्षा करके संकट में पड़ेगा। ''सामाजिक क्रांति सामाजिक पुनर्निर्माण विषयक तथा अन्य ऐसी समस्याएँ हैं जिसके सम्बन्ध में गाँधीवाद को निश्चित योगदान करना है।''

गाँधीवाद एवं समाजवाद की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा था कि गाँधीवाद ही समाजवाद है ऐसा मैंने कोई वक्तव्य नहीं दिया। वैज्ञानिक समाजवादी गाँधी जी को उपेक्षा की दृष्टि से देखते है। वे उन्हें सनकी बताते है। उदाहरणार्थ–''गाँधीजी के विचार आणुविक युग में पुराने पड़ चुके है, मध्ययुगीन एवं प्रतिक्रियावादी है। और निहित स्वार्थों का अप्रत्यक्ष रूप से पक्ष लेते हैं। जयप्रकाश इन विचारों से सहमत नहीं थे। वे समाजवादियों को सर्वोदय के मार्ग को ग्रहण करने का परामर्श देते रहे थे। उन्होंने विगत 24 वर्षों तक सर्वोदयी के रूप में कार्य भी किया था। संकटकाल के लेकर भूदान का काम रूक–सा गया था। विनोबा जी ने जिस उत्साह एवं उमंग के साथ भूदान का कार्य प्रारंभ किया था उसी प्रकार उसे पुनः शुरू करने के जयप्रकाश समर्थक थे। उनका कथन था यह महत्त्वपूर्ण नहीं है कि भूदान समितियों ने कितनी भूमि प्राप्त की। वास्तव में महत्त्वपूर्ण तो वह भावना है जो भूमि देने एवं लेने के पीछे है।

निष्कर्ष :

जयप्रकाश समाजवादी थे। किन्तु वे दलीय राजनीति के कुप्रभाव से परिचित थे। अतः जयप्रकाश को लोकतंत्र के इन दोषों को देखते हुए समाजवाद के अन्य विकल्प की खोज करनी पड़ी और इस विकल्प की खोज के लिए उन्होंने महात्मा गाँधी की ओर प्रतिगमन' का रास्ता निकाला। जयप्रकाश गाँधीजी के समय उनकी नीतियों पर कभी नहीं चलें। किन्तु उनके बाद उन्हें गाँधीजी के विचारों से ही तृण मिला। वे 1952 में विनोबा जी के भूदान आन्दोलन में शामिल हो गये और अन्त तक गाँधीजी के विचारों पर चलते रहे। गाँधीजी की तरह वे भी आध्यात्मिक सत्ता को स्वीकार करने लगे। गाँधीजी ने सर्वोदय, राष्ट्र का प्रयोग किया। इससे जयप्रकाश इतना प्रभावित हुए कि यह उनका तीसरा धर्म बन गया।

जयप्रकाश के अनुसार सर्वोदय 'गहरे अर्थों वाला आन्दोलन' है। यह आन्दोलन एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण करना चाहता है, जो सभी आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक संगठनों में क्रांति लाये। किन्तु जयप्रकाश इस क्रांति को लाने के लिए गाँधीजी के अनुसार इन पाँच अस्त्रों के प्रयोग पर बल देते हैं–सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय, ब्रह्मचर्य।

सर्वोदय का अर्थ है, 'सबका जीवन साथ–साथ सम्पन्न हो। सर्वोदय मानता है कि सबका उदय कोरा स्वप्न या कोरा आदर्श नहीं है यह आदर्श व्यवहार्य है इसे अमल में लाया जा सकता है। इसके लिए 30 जनवरी, 1950 को वर्धा में एक 'सर्वोदय योजना' का निर्माण हुआ। इसमें 200 रचनात्मक कार्यकत्ता थे। इसकी नींव गाँधीजी ने रखी थी। सर्वोदय योजना में वर्गविहीन–जातिविहीन समाज के साथ–साथ, सोशलिस्ट कार्यक्रमों में से 80 फीसदी कार्यक्रम इसमें शामिल थे।

जयप्रकाश ने समाजवादियों को चेतावनी देते हुए कहा कि समाजवाद गाँधीवाद की उपेक्षा अपने विनाश पर ही कर सकता है। सामाजिक विकास एवं सामाजिक पूनः निर्माण के क्षेत्र में गाँधीजी का विशेष योगदान है। मेरा यह कहना है कि हर वैज्ञानिक समाजवादी का यह कर्त्तव्य है कि वह गाँधीवाद को समझे और समाजवाद की स्थापना के लिए जितना आवश्यक समझा जाए, उतना स्वीकार किया जाए।

सर्वोदय का आदर्श दल विहीन लोकतंत्र की स्थापना का रहा है। यह बुनियादी सामाजिक क्रांति का एक ठोस कार्यक्रम है यह निरा भावुकतावाद नहीं है।

संदर्भ सूची :

1. जयप्रकाश नारायण, ज्वूंतके‟जतनहहसम – युसुफ मेहर अली द्वारा सम्पत्ति, पद्मा पब्लिकेशन्स, बम्बई, 1946
2. भारत में समाजवाद : डॉ0 लोहिया
3. समाजवाद : आचार्य नरेन्द्र देव, डॉ0 लोहिया और जयप्रकाश जी की दृष्टि में
4. भारतीय सामाजिक चिन्तन एवं राष्ट्रीय आन्दोलन, डॉ0 हरदयाल जायसवाल
5. आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन : डॉ0 वी.वी. वर्मा
6. डेंदपए डपदवव रूे श्रंलं च्तोंी जीम ।दूमत घ्ए छमू क्मसीपए डंबउपससंद रू 1975य चण 13
7. जयप्रकाश नारायण ; समाजवाद, सर्वोदय और लोकतंत्र ; पृ0–203
8. जयप्रकाश नारायण ; समाजवाद, सर्वोदय और लोकतंत्र, पृ0–181
9. डॉ0 इकबाल नारायण : राजनीति शास्त्र के मूल सिद्धांत ; रतन प्रकाशन मन्दिर, 1986–87, दिल्ली ; पृ0–847
10. दादा धर्माधिकारी : सर्वोदय दर्शन, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 1960, पृ0–3
11. जयप्रकाश नारायण : समाजवाद, सर्वोदय और लोकतंत्र ; पृ0–3
12. जयप्रकाश नारायण : मेरी विचार यात्रा, भाग–1, पृ0–30
13. जयप्रकाश नारायण : सामाजवाद, सर्वोदय और लोकतंत्र ;पृ0–103–104
14. जयप्रकाश नारायण : समाजवाद, सर्वोदय और लोकतंत्र, पृ0–104
15. दादा धर्माधिकारी ; सर्वोदय दर्शन, पृ0–14–15
16. भगवान दास केला : राज व्यवस्था सर्वोदयी दृष्टि से ; पृ0–92–94
17. उपरोक्त, 203 ; जयप्रकाश : सर्वोदयी सामाजिक व्यवस्था का स्वरूप (अंग्रेजी), 1955, पृ0–43
18. जयप्रकाश नारायण : क्रांति की आँधी, जनता प्रकाशन, 1954, पृ0–11–12, विनोबा, भूदान गंगा, भाग–1, काशी, पृ0–252 ; दादा धर्माधिकारी : सर्वोदय दर्शन, पृ0–241
19. अंजनि कुमार जगदाग्नि : जयप्रकाश नारायण, पृ0–208
20. जयप्रकाश नारायण : सामाजवाद, सर्वोदय और लोकतंत्र ; पृ0–46
21. दादा धर्माधिकारी : सर्वोदय दर्शन ; पृ0–13

22. जयप्रकाश नारायण : मेरी विचार यात्रा ; भाग 1, पृ0–20

23. श्रंलं च्तौी छंतंपद रू । च्पबजनतम वf"तअवकंलॅ"वबपंस व्तकमतए ज्ंदरवतम य"तअवकंलं च्नइसपबंजपवदेए 1961ए चण 11

24. अंजनि कुमार जगदाग्नि ; जयप्रकाश नारायण, पृ0– 211–212

25. समाजवाद, सर्वोदय और लोकतंत्र, पूर्वोक्त, पृ0–108